P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-V*January-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

विद्यार्थी जीवन में बोए मूल्य शिक्षा के बीज

सारांश

हमारी शिक्षा प्रक्रिया लगभग उतनी ही पुरानी है जितना की मनुष्य का अस्तित्व प्राचीन समय में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी के मूल्यों का विकास करना था जिससे बालक का शारीरिक विकास के साथ–साथ चारित्रिक और नैतिक मूल्यों का विकास हो जाये। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में सबसे बड़ा परिवर्तन अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के प्रभाव से उत्पन्न हुआ। लार्ड मैकाले द्वारा शिक्षा प्रणाली का यथास्वरूप अपनाकर भारतीय शिक्षा प्रणाली को मूल्यविहीन शिक्षा बना दिया। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में आत्मिक शिक्षा का छोटा सा अंश भी नहीं मिलता। स्वामी विवेकानंद के अनुसार–''वर्तमान शिक्षा व्यवस्था सूचनाओं का ढेर मात्र है विभिन्न प्रकार सूचनाएं बच्चों के मन में भर दी जाती है और वे कभी न कभी गड़बड़ियां ही पैदा करती है।''

मुख्य शब्द : सर्वशक्तिमान, प्रकृति

बी. एल. दायमा
निदेशक योग केन्द्र,
शारीरिक शिक्षा विभाग,
ज.ना.व्यास.वि.वि.,
जोधपुर

मांगेलाल
शोधार्थी,
ज.ना.व्यास.वि.वि.,
जोधपुर

परिचय

इस दृष्टि से वर्तमान शिक्षा मूल्यविहीन तथा संस्कार रहित हो गई है और हमारी कक्षाओं का शिक्षण कार्य भी लगभग निर्जीव नीरस हो गया है जो कि चिंता और मनन करने का विषय है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसके कारण उसमें मानवीय गुणों का समावेशित होना आवश्यक है और जब तक बच्चों में मूल्यों का समावेश नहीं होगा तब तक एक अच्छे राष्ट्र, समाज के विकास की तो क्या एक अच्छे स्वच्छ परिवार की कल्पना करना कोसों दूर की बात होगी मनुष्य मूल्यों के माध्यम से ही सामाजिक विसंगतियों, बुराइयों का अन्त एवं परिवार और सुनागरिकों का निर्माण कर सकते है। मूल्यों के बारे में गाँधी जी ने कहा कि ''सच्चरित्रता के अभाव में केवल बौद्धिक ज्ञान सुगन्धित शव के समान है।'' मनुष्य को मूल्यों से विभ्रम न होकर के समाज को संस्कारवान बनाना है।

विद्यार्थी जीवन में बोए मूल्य शिक्षा के बीज

वस्तुओं के मूल्य तो आसमान को छू रहे है लेकिन मानवता के मूल्य धरातल पर दिनों दिन औंधे मुँह गिर रहे है परिवार, समाज, राष्ट्र एवं पूरे विश्व में शान्ति, सौहार्द्र और भाईचारा आदि की बाते तो सब करते है लेकिन ये मूल्य हमें बात करने से प्राप्त से नहीं होंगे इसके लिए सम्पूर्ण मानव जाति को प्रयास करना होगा जो कि सही भी है। और सबसे पहले हमें स्वयं को मूल्यों की शिक्षा देनी होगी और उसके उपरान्त हमारे देश के भावी कर्णधारों में मूल्य शिक्षा के बीज बोने होगें जो बड़े होकर विशाल बरगद की तरह सबको सुकून व शान्तिमय वातावरण प्रदान करेगा। लेकिन हम सबके दिमाग में बार–बार यही प्रश्न उठता है कि हम देश के भावी कर्णधारों में अर्थात युवाओं में मूल्य शिक्षा के बीज कैसे बोए और किस प्रकार बोए? इसके लिए हमें कुछ प्रयास करनें होंगे।

1. बच्चों की प्रथम गुरू माँ होती है माँ को बेटे–बेटी को एक समान समझते हुए वात्सल्य एवं ममत्व प्रदान करना चाहिए।
2. बच्चों को अच्छी आदत सिखाते हुए पारिवारिक तौर तरीकों की जानकारी देनी चाहिए।
3. भारतवासियों में धर्म में बहुत बड़ी आस्था है तो बच्चों में बचपन से ही धार्मिक मूल्यों को जागृत करने पर बल दिया जाना चाहिए।
4. बच्चा एक आर्द्र (गीली) मिट्टी की तरह होता है उसे जिस सांचे में ढाला जाये वह उसी का स्वरूप ले लेता है इसलिए बचपन (बाल्यावस्था) में ही बच्चों को शिक्षा देनी चाहिए ताकि हमारे हिस्से में आये हुए कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन, माता–पिता की सेवा और तन–मन, वचन से दूसरों की मदद करके पृथ्वी के सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त कर सकें ।
5. हमें बच्चों के सामने अभद्र व्यवहार नहीं करना चाहिए क्योंकि जब हम सुधरेंगे तो परिवार एवं समाज सुधरेगा।
6. अच्छे संस्कार एवं नैतिक मूल्यों गुणों के फूल खिलाने है तो शिकायत व कमियां निकालने की बजाय बड़ो का विनय–आदर एवं स्वयं को सुनागरिक

के रूप में प्रस्तुत करना होगा जिससे समाज का वातावरण बदलेगा और सम्पूर्ण मानव जाति मूल्यों रूपी गुणों से फलीभूत होगी।

7. बाल्यावस्था से ही आध्यात्मिकता के माध्यम से बताना होगा कि जिस प्रकार राम से मर्यादा, कृष्ण से कर्मयोग, महावीर से अहिंसा मोहम्मद साहब से त्याग तथा नानक से समर्पण के भाव सिखाने होगें। तभी हमें आध्यात्मिक मूल्य प्राप्त होंगे।

विद्यालयों द्वारा मूल्य शिक्षा

1. पाठ्यक्रम इस प्रकार का निर्मित होना चाहिए जो कि जिसमें बालकों में समाज सेवा तथा देश भक्ति की भावना जागृत कर सकें क्योंकि वर्तमान पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा से संबंधित सैद्धान्तिक पाठों का अंश बहुत ही कम है।
2. विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा कहानी, नाटक, वाद–विवाद प्रतियोगिता तथा अन्य सहगामी शैक्षिक क्रियाओं द्वारा सामाजिक व नैतिक मूल्यों का विकास किया जाना चाहिए।
3. विद्यार्थियों को हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं व रीति रिवाजों से सम्बन्धित कार्यक्रम आयोजित करवाकर सांस्कृतिक मूल्यों की शिक्षा देनी चाहिए।
4. विद्यालय में अन्य गतिविधियां जैसे सृजनशील एवं रचनात्मक कार्यक्रम आयोजित करवाने चाहिए।
5. अध्यापकों को स्वयं को विद्यार्थियों के समक्ष एक उत्तम नागरिक का व्यवहार प्रस्तुत करके, उनका आदर्श बनना चाहिए।

मूल्य शिक्षा के इस वृक्ष को ध्यान से देखिये मूल्य शिक्षा प्राप्त करने से जीवन में अनमोल फलों की प्राप्ति होती है।

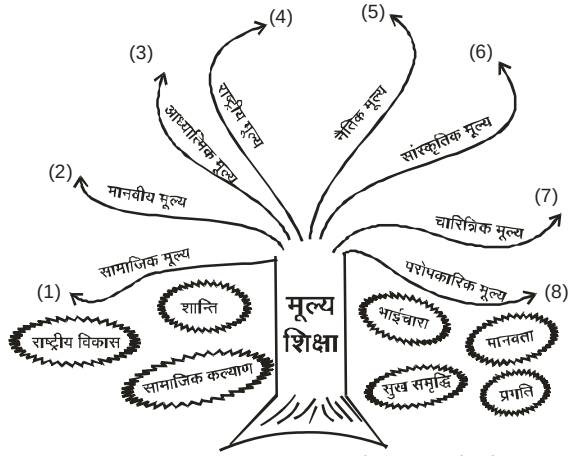

इस मूल्य विहीन शिक्षा रूपी वृक्ष को ध्यान से देखिए न तो छाया प्रदान कर रहा है केवल एक ठूंठ के रूप में है जो दुख व पीड़ा अशांति के रूपी ही फल प्रदान करता है।

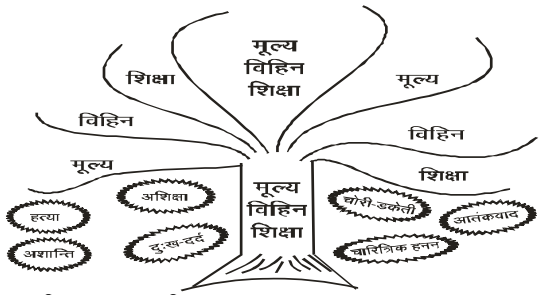

मूल्य शिक्षा का व्यक्तित्व पर प्रभाव

मूल्य शिक्षा का बालक के व्यक्तित्व पर निम्न प्रभाव चित्र में दर्शाया गया है –

विद्यार्थी के भविष्य को यदि रोशन करना है तो उसमें मूल्य शिक्षा का बीज बोना होगा यह वह बीज है जिसकी फसल लहरायेगी तो सम्पूर्ण देश तो क्या विश्व जगत समृद्धि से लहरायेगा दिक् दशाओं में सुख सृद्धि की फसल होगी।

वर्तमान में मानव के समक्ष मूल्य शिक्षा एक बडी चुनौती के रूप में उभर कर आई है इस चुनौति का समाधान करने के लिए विद्यार्थी जीवन में मूल्य शिक्षा की अत्यंत ही आवश्यकता है मूल्य शिक्षा को केवल विद्यालयी शिक्षा के माध्यम से ही नहीं घर, परिवार, समाज आदि से भी प्राप्त किया जा सकता है । घर, परिवार एवं समाज में इन सब की सार्थक भूमिका होती है । क्योंकि रोगी को दवा दिखाने से रोग दूर नहीं होगा उसे दवा देने से ही रोग दूर होगा। इसी प्रकार मूल्य शिक्षा की बातें करने से नहीं बल्कि मूल्यों को पाठ्यक्रम में शामिल करके और घर, परिवार एवं समाज में जागृति पैदा करके मूल्य शिक्षा के बीज को अंकुरित करके बाल जीवन को उज्ज्वल करना है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नैतिक शिक्षा : विविध आयाम– डॉ. महावीरमल लोढ़ा 2008
2. शैक्षिक चिंतन धाराः सुन्दरलाल माथुर 2009
3. स्व–संजीवनीः जयमेश शाह
4. राजस्थान पत्रिका
5. वेबसाईट्स